First Interim Report

The 3rd Rufford Small Grant Foundation, U.K., supported "Chinkara Conservation Project" started in May 2010.

The major highlights during from May –August 2010 are as follows:

- Last year the monsoon completely failed in this part of India, and the entire year was declared as Famine Year by the government. The wild animals also suffered due to shortage of food plants.

- This scarcity of food was the major problem and breeding highly reduced in the Chinkara populations. Very few fawns were added in the herds and the health condition was pathetic in the entire landscape.

- This situation leads high mortality due to unavailability of food and free water to drink. Information on deaths of Chinkara due to unavailability came from all corners.

- In the June end, the cyclone "Phet" resulted heavy rainfall within a short spells of 2 days in western Rajasthan. Air temperature dripped down from 48-49° C to 15-20° C. It turned another natural calamity event and almost 60-70% population of Chinkara suffered from pneumonia and cold. Our team extended help to the local community and also to the Rescue Centre of Local Zoo for treatment, care and coordination for helping the week and diseased Chinkaras. More then 150 Chinkaras were rescued and given first-add and also helped at Rescue Centre for treatment.

- The major objective of this project was also initiated and two meetings with Forest Officials were organized. They are ready to share data on habitual poachers. In next meeting we will successfully receive data from officials and start working for negotiating the poaching tribes.

राजस्थान पत्रिका
जोधपुर, रविवार, 6 जून 2010

चिंकारों पर होगा शोध

नई परियोजना को मंजूरी

कार्यालय संवाददाता @ जोधपुर

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने थार के रेगिस्तान में चिंकारों पर शोध की एक नई वृहद परियोजना को मंजूरी दी है। तीन वर्ष की इस परियोजना पर करीब 18 लाख खर्च होंगे।

इस शोध परियोजना के तहत जोधपुर, नागौर, बाड़मेर, जैसलमेर एवं बीकानेर जिलों के चिंकारा बहुल क्षेत्रों में चिंकारों के जीवन व्यवहार का अध्ययन किया जाएगा। इकोलॉजी रुरल डवलपमेंट सोसायटी जोधपुर के सचिव डॉ. सुमित डऊकिया की देखरेख में शोध कार्य अगस्त में शुरू होगा।

सोसायटी अध्यक्ष एवं वर्तमान में बीकानेर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर गंगाराम जाखड़ ने बताया कि विकास ही थार के संरक्षित क्षेत्र में स्वच्छंद विचरण करने वाले चिंकारों के लिए विनाश का कारण बन रहा है। डॉ. डऊकिया ने बताया कि लंदन की द रूफर्ड ग्रांट फाउंडेशन के सहयोग तीन वर्ष पूर्व भी पश्चिमी राजस्थान के चिंकारों पर शोध किया गया था। इसके दौरान चिंकारों की संख्या में 38 प्रतिशत तक कमी पाई गई थी। सर्वे में पाया गया था कि वर्ष 2002 में चिंकारों का घनत्व क्षेत्र 1.24 वर्ग किमी था जो घटकर 1.03 वर्ग किमी रह गया। सर्वे टीम ने चिंकारों के आश्रय स्थल, खान-पान, प्रजननकाल एवं संरक्षण के बारे में शोध किया था। सर्वे के दौरान जोधपुर जिले के चिंकारा बहुल क्षेत्रों- गुड़ा विश्नोइयां, धवा- डोली, लोहावट और देचू में चिंकारों की मृत्यु दर प्रतिवर्ष 43 प्रतिशत पाई गई। इसी को आधार बनाकर नई परियोजना के तहत चिंकारों पर विस्तृत शोध किया जाएगा।

News of the project initiation in National Daily.

Dr. Sumit Dookia, Principal Investigator, in middle at rescue centre with the forest staff.

Dr. Sumit Dookia, Principal Investigator, given an interview at National TV Channel, regarding the project work.

Diseases and rescued Chinkara, after treatment, at Rescue Centre of Local Zoo.

Healthy chinkara, later on released in wild.

17 और चिंकारों की मौत

नहीं थम रहा मौत का सिलसिला, दिनभर में 50 घायल

पत्रिका 8.7.2010

जोधपुर. वन्यजीव बहुल गांवों में हरिणों-चिंकारों की मौत का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। जिलेभर से लाए गए लगभग 125 घायल चिंकारों-हरिणों में से अब तक 40 की मौत हो चुकी है। रेस्क्यू सेंटर में बुधवार को 17 चिंकारों की मौत हो गई और 30 चिंकारों को गंभीर घायल हालत में लाया गया। बुधवार को भाचरना, फींच, बड़लिया, पीथावास एवं जांगुवास में कुत्तों के हमले से 20 चिंकारे घायल हो गए। अकेले फींच क्षेत्र में घायल 15 चिंकारों में से 4 की मौके पर ही मौत हो गई। उधर, वनविभाग के उड़नदस्ते के तीन वाहनों के अलावा विश्नोई टाइगर्स वन्य एवं पर्यावरण संस्था के सहयोग से 15 चिंकारों-हरिणों को रेस्क्यू सेंटर लाया गया। संस्था के प्रदेश अध्यक्ष रामपाल भवाद ने ब्लॉक स्तर पर रेस्क्यू सेंटर स्थापित कर पशु चिकित्सक की व्यवस्था की मांग की।

पांच चिंकारों ने कुलाचे भरी : रेस्क्यू सेंटर के डॉ. श्रवणसिंह राठौड़ ने बताया कि इलाज के बाद स्वस्थ हो चुके पांच चिंकारों को छोड़ दिया गया।

चिंकारे का मांस पकाते दबोचा : धवा चौकी के पास ही गेलावास गांव में चिंकारा का मांस पकाते शिकारी को दबोचा गया। क्षेत्रीय वन अधिकारी सुरेश बोहरा, धवा चौकी प्रभारी खुंडाराम विश्नोई झंवर थानाधिकारी के साथ शिकारी दुर्गाराम भील के घर पर दबिश दी। घर से चिंकारे का मांस एवं अवशेष बरामद कर लिया गया।

News cutting of the National Daily regarding the severity of Cyclone "Phet" and its impact on Chinkara.

त्रिका

पत्रिका

6.7.10

28 चिंकारे घायल

कार्यालय संवाददाता @ जोधपुर

जिले के वन्यजीवों के लिए श्वान सबसे बड़े शिकारी साबित हो रहे हैं। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में पिछले एक सप्ताह से चल रहे वन्यजीवों की मौत का ग्राफ सोमवार को बारिश के बाद और भी बढ़ गया। बारिश के बाद नम भूमि पर दौड़ने में असमर्थ चिंकारों पर सोमवार रात तक जिले के विभिन्न ग्रामीण इलाकों में कुत्तों ने धावा बोलते हुए 28 चिंकारों को गंभीर घायल कर दिया। वन विभाग के सूत्रों ने बताया कि देर शाम तक रामड़ावास से 4, खेड़ों की ढाणी 4, जालेली 7, धायलों की ढाणी 3, बीनवास 1, काकेलाव 2, सरनाडा 3 एवं डांगियावास-लूणी बाईपास रोड 3, तथा बंबोर से 1 चिंकारे

को कुत्तों द्वारा घायल कर देने की सूचना मिली।

बोरी में मृत मिला हरिण

जिले के पीपरली धुंधाड़ा की कच्ची सड़क पर सोमवार को बोरी में मिले मृत मिले काले हरिण से ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया। सूचना के बाद मौके पर पहुंचे वन्यजीव उड़नदस्ते ने बोरी से मादा काले हरिण को बाहर निकला। मृत हरिण के चारों पैर नॉयलॉन की रस्सी से बंधे थे तथा उसकी आंखे बाहर निकली हुई थी। मुंह पर भी खून के निशान थे। मामला दर्ज कर लिया गया है। हरिण का पोस्टमार्टम मंगलवार को मेडिकल बोर्ड से कराया जाएगा।

मोरों का पोस्टमार्टम

जिले की फलोदी तहसील के कुशलावा ग्राम स्थित खेत में रविवार को संदिग्ध अवस्था में मृत मिले पांच मोरों का पोस्टमार्टम सोमवार को तीन सदस्यीय चिकित्सकों के मेडिकल बोर्ड ने किया। चिकित्सकों के अनुसार किसी विषाक्त पदार्थ के खाने से मोरों की मौत से इनकार नहीं किया जा सकता। विधि विज्ञान प्रयोगशाला से जांच रिपोर्ट आने के बाद ही मामले का खुलासा होगा।

वन्यजीवों के शव ढूंढती रही टीम

बाड़मेर एसीएफ ने किया दौरा

जोधपुर. जिले के धवा सीमा से सटे डोली क्षेत्र में 25 से अधिक चिंकारों की मौत के बाद बाड़मेर के वन अधिकारियों ने भी सोमवार को मौके का दौरा किया। मुख्य वन संरक्षक के निर्देश के बाद बाड़मेर के सहायक वन सरंक्षक वन्यजीव ओमप्रकाश चौधरी ने विभाग की टीम के साथ रेंज क्षेत्र का सर्वे किया। उन्होंने क्षेत्र के वन्यजीव प्रेमियों से बाड़मेर रेंज में सभी मृत चिंकारों के शवों को एकत्रित कर दफनाने की व्यवस्था का भरोसा दिलाया। उधर वनविभाग ने जोधपुर-बाड़मेर की वनचौकियों पर तैनात वनकर्मियों को वन्यजीवों के लिए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश जारी किए हैं।

मीठे पानी के बाद अब हरा-चारा : जिले के भाचरना एवं धवा क्षेत्र के हरिणों के लिए शनिधाम ट्रस्ट आलावास के प्रमुखं एवं महामंडलेश्वर दाती मदन महाराज ने सोमवार को हरे चारे से भरे दो ट्रक भिजवाए। उल्लेखनीय है कि 3 जुलाई को राजस्थान पत्रिका में 'और तीस काले हरिणों की मौत' शीर्षक से समाचार प्रकाशित होने के बाद हरकत में आए वनविभाग ने न केवल सभी मृत हरिणों के शवों को दफनाया बल्कि क्षेत्र में विचरण करने वाले दूसरे वन्यजीवों के लिए भी मीठे पेयजल की व्यवस्था की।

News cutting in the National Daily regarding the work of community members and project personals for helping and treating in Rescue centre.

राजस्थान पत्रिका

6

जोधपुर . बुधवार . 9 जून 2010

विभिन्न स्थानों पर बाईस हरिणों की मृत्यु

हरिणों पर बारिश की मार

कार्यालय संवाददाता @ नागौर

अकाल के हालात में चारे और पानी से कमजोर हो चुके हरिणों पर सोमवार को हुई बारिश काल बनकर गिरी। शारीरिक कमजोरी के चलते अचानक बारिश से बढ़ी ठंड से जिले के 24 गांवों में दो दिन में 22 हरिण मौत का शिकार हो गए जबकि 63 हरिण जिदंगी और मौत के बीच झूल रहे हैं। मरे हरिणों में अधिकतर चिंकार प्रजाति के हैं।

पांचौड़ी, गुढ़ा भगवानदास, सथेरण, अलाय, सुखवासी, चावण्डिया, सथेरण, भदवासी, चांतरा मंजरा, भेड़, इंदास, खारी, कालड़ी, खड़काली, चीलों, थंलाजू, गोगेलाव समेत दो दर्जन गांवों में दिन भर की बारिश के बाद चली ठंडी हवाओं ने भूखे व शरीर से कमजोर हरिणों को चपेट में ले लिया और देखते ही देखते हरिणों के शवों के ढेर लग गए।

उप वन संरक्षक केआर काला ने बताया कि सोमवार शाम 14 हरिणों की मौत के समाचार मिले। मंगलवार को आठ हरिण इलाज के दौरान गोशालाओं में दम तोड़ गए। 63 घायल हरिणों का विभिन्न गोशालाओं में इलाज चल रहा है। गंभीर रूप से घायल हरिणों को बचाने के लिए पशु चिकित्सकों के दल दिन भर इलाज में जुटे रहे। जो हरिण मरे है उनमें अधिकांश चिंकारा प्रजाति के है। इनमें से कई हरिणों को कुत्तों ने शिकार बनाया।

नागौर में मंगलवार को महावीर गोशाला में बारिश में घायल हरिणों को देखते जिला कलक्टर डॉ.समित शर्मा। पत्रिका

पशु प्रेमियों में रोष

बड़ी संख्या में हरिणों की मौत से पशु प्रेमी सदमे में हैं। पीपुल फॉर एनीमल्स संस्था के जिलाध्यक्ष हिम्मताराम भांभू ने कहा कि यह सारा घटनाक्रम वन विभाग की लापरवाही का नतीजा है। वन्य जीवों के प्यासे-भूखे मरने की सूचना के बावजूद वन अधिकारियों ने लापरवाही बरती। उधर उप वन संरक्षक काला ने कहा कि समय पर यहां गोशाला में लाकर 63 हरिणों की जान बचा ली गई।

लिया जायजा

जिला कलक्टर शर्मा ने मंगलवार को महावीर गोशाला में घायल हरिणों के इलाज की व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने गंभीर घायल हरिणों की समुचित देखभाल के निर्देश पशुपालन अधिकारियों को निर्देश दिए। गोशाला के प्रबन्धक बलदेवराम सांखला ने हरिणों के उपचार की व्यवस्था की जानकारी दी। कृष्ण गोपाल गोशाला के प्रबंधक बलदेवराम सांखला ने बताया कि सोमवार को गोशाला में 47 हरिण लाए गए।

District Collector at site for assuring the community workers for help in saving the Chinkara and other wild animals suffering from the impact of cyclone "Phet".